International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(2): 289-290

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(2): 289-290
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 29-10-2021
Accepted: 04-01-2022

डॉ. जया शुक्ला
अतिथि व्याख्याताए संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. जया शुक्ला
अतिथि व्याख्याताए संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

स्वकीया नायिका सीता

डॉ. जया शुक्ला

प्रस्तावना

राष्ट्र के आध्यात्मिक चारित्रिक, आदि भौतिक निर्माण के लिए एवं निरन्तर उस मार्ग पर प्रगति पथ पर चलते रहने के लिए साहित्य होना चाहिए। वैदिक काल से ही भारतीय नाटक साहित्य की अजस्त्र धारा प्रवाहमान है। किसी न किसी रूप में वेदों के नृत्य, संगीत, अभिनय, संवाद इसके उदाहरण है। नाटकीय संवाद के रूप में यम–यमी, उर्वशी–पुरूखा, सरमापणि, इन्द्र–मरूत्, वृक्षा–कपि सूक्त विद्यमान है, यही सूक्त, संवाद नाटक रूप में परिणत हुए होंगे। नाट्यशास्त्र के प्रतिष्ठाता भरत मुनि के अनुसार नाटक की उत्पत्ति त्रेतायुग में ब्रम्हा द्वारा की गई थी। इस पंचम वेद–नाट्यवेद के चार अंग है– पाठ्य, गीत, अभिनय व रस। इन चारों तत्वों को ब्रम्हा ने क्रमशः ऋक्, साम, यजुष एवं अथर्ववेद से गृहीत किया[1] (भरत नाट्यशास्त्र–1)
रूपक के दस भेदों में नाटक प्रथम है।[2] (दशरूपक 1–8)। साथ ही रूपकों के भेदक तत्वों को भी दशरूपकार बताते हैं – वस्तु नेता रसस्तेषां भेदकः।[3] (दशरूपक 1–10) यहाँ नेता के अन्तर्गत नायक, नायिका, प्रतिनायक सहनायक आदि सभी आ जाते हैं। बालरामायण रामकथा अर्थात् रामायण को आधार बनाकर लिखा गया नाटक है, जिसमें कहीं–कहीं स्वरूप को परिवर्तित कर हृदयग्राही बनाया गया है। राजशेखर के साहित्य में आधिभौतिक , आध्यात्मिक, कलात्मक लोककल्याणात्मक संस्कृति का कोई भी पक्ष लें उनकी उदात्तता निश्चित ही परिलक्षित होती है। महाकवि राजशेखर ने कल्पना प्रसूत ऊर्जस्विता को, आशाओं को, आकांक्षाओं को, भावनाओं को आदर्श प्रतीक रूप में पात्रों में चित्रित किया है।

स्वकीया नायिका :–

बालरामायण नाटक की नायिका सीता है। सीता स्वकीया नायिका है। शील व लज्जा से युक्त रहने वाली नायिका को स्वकीया कहते हैं –
'मुग्धा मध्या प्रगल्भेति स्वीया शीलार्जवादियुक्।[4] (दशरूपक– 2–15)
इसी तरह नाट्यदर्पण में भी लिखा है– 'लज्जावती मृदुर्धीरा गम्भीरा स्मितहासिनी विनीता कुलजा दक्षा वत्सला योषिदुत्तमा।[5] नाट्यदर्पण 159
बाल रामायण में सीता के चरित्र के माध्यम से राजशेखर भारतीय संस्कृति के धर्म, मूल्य को चित्रित करने में सफल हुए हैं, साथ ही उनकी नायिका सीता, नायिका के लक्षण को भी अपने में पूरी तरह से खरा उतारती है। वह सीता स्वयम्बर के अवसर पर रावण से डरी हुई जनक एवं शतानन्द के मध्य में ही आसन ग्रहण करती है– 'तादसदानन्दमिस्साणं अन्तरे उवविसस्सम्।[6] बालरामायण पृष्ठ–129 । सीता विदाई के समय शतानन्द के द्वारा प्रेम से सीता को पतिव्रता स्त्री बनने की शिक्षा देते हैं तब सीता लजा जाती है।[7] बालरामायण पृष्ठ 164 और यहाँ तक अग्नि परीक्षा देकर निकलते समय भी लज्जालु नायिका दृष्टिगोचर होती है– 'पादांगुष्ठनखाग्रदत्तनयना'[8] बालरामायण में सीता चरित्र में मृदुता एवं धैर्य अनेक स्थलों पर दृष्टिगोचर होती है। दुर्गम वन के मार्ग में सीता की वाणी की मृदुता, शरीर की कोमलता का प्रसंग सहृदय को भावुक कर देता है–

'सद्यः पुरीपरिसरेऽपि शिरीषमृद्वी,
गत्वा जवात् त्रिचतुराणि पदानि सीता'।
गन्तव्यमस्ति कियदित्यसकृदं ब्रुवाणा
रामाश्रुणः कृतवती प्रथमावतारम्।[9]

वह पतिव्रता सीता पति का अनुसरण करने वाली सीता के धैर्य को देखते हुए राम के विरोध करने पर भी किसी न किसी बहाने से आधे रास्ते में ही पड़ाव डाल दिया जा रहा था।[10] अनेक कठिनाईयाँ वन के मार्ग में आईं, प्यास से सीता मूर्छित हुईं, चलते–चलते थक गईं, प्रत्येक कन्दरा में डर से आंखे ढ़क लेती थीं, फिर भी सीता के चरित्र में धैर्य व गाम्भीर्य समाया रहा है। रावण वध के अनन्तर सीता के पातिव्रव्य के प्रति अल्का का यह कथन – 'अहो खलु भोः। पतिव्रतामयं ज्योतिरनभिभवनीयं ज्योतिरन्तरैः। पतिव्रत को बताता है साथ ही धैर्य को दर्शाता है–

'प्रतिशन्त्या चित्रावक्त्रं जानक्या परिशुद्धये।
भेदः कोऽपि न निर्णीतः पयसः पावकस्य वा।[11]

धैर्ययुक्त सीता पवित्रता का प्रमाण निःसंकोच सहर्ष देती है। वहीं गृहिणीत्व का प्रदर्शन कराती हुई सीता त्याग की भावना से भरी स्वयं नीरस फलमूल खाती हुई आदर्श की उच्चता को प्राप्त कर जाती है–

'यदास्वाद्यं सीता वितरति तदग्रे स्वगृहिणे,
सुमित्रापुत्राय प्रणिहितमशेषं च तदनु।

यदामं वा नामं यदनतिरसं यच्च विरसं,
फलं वा मूलं वा रचयति तु तेन स्वमशनम्।।[12]

इस श्लोक में सीता का गृहिणीत्व उनको विनीत, दक्ष, वत्सला, त्यागी के रूप में स्थापित कर स्वकीया नायिका के लक्षणों से युक्त करता है।

स्मितहासिनी के रूप में पुष्पक विमान से आते हुए राम के कहने पर कि 'यहाँ किसी के द्वारा राक्षसपति की कण्ठाट्वी काटी गई है।' सीता मुस्कुराकर विनोदपूर्वक कह देती है– क्या आर्यपुत्र जानते हैं, वह काटने वाला कौन ?[13] सीता का स्मित हासिनी होने का उदाहरण मिलता है।

सीता संक्षेप में दक्षता से जो स्वयंवर में राजा आए हुए थे, उनकी अयोग्यता को कह देती है– 'यः प्रतिदिनमण्डनमात्रव्यापारे सक्तचितः।[14] वे दक्षतापूर्वक मितभाषण करती है। वात्सल्यमयी सीता का वात्सल्य को दर्शाता हुआ वामदेव का यह कथन कितना मार्मिक है– 'स्मर्त्व्यासि चिरं चकोर दयिते दाव्यूहिं तुभ्यं नमो दृष्टस्त्वं शितिकण्ठ संहर गिरो गच्छाम्यहं सारिके।[15] और भी अनेक उदाहरण उनके वत्सला होने के प्रमाण है– 'तुभ्यं स्वस्ति विलासवापि भवतीं प्रेक्षे पुर्नदर्शनं, क्रीडाक्रीड विमुच्चसेऽद्य कथितं हे केलिदोले तव। वासागार नमोऽस्तु ते गुणनिकाः सर्वाः सुखं स्थीयता मेषा वः परिचारिका वनभुवं रामानुगां गच्छति।[16]

निष्कर्ष :–

इस प्रकार नायिका के नाट्यशास्त्रीय लक्षण के आधार पर बालरामायण नाटक की नायिका सीता में स्वकीया के लक्षण घटित होते हैं। संस्कृत साहित्य की हर विद्या में अन्वय–व्यतिरेक पूर्वक राम एवं सीता के चरित्र का ही उल्लेख मिलता है। सहस्त्राब्दियों से रचनाकारों ने रामायणी कथा को अपनी कथा का मूल आधार बनाया है। बाल्मीकि अपने आदि काव्य में स्वयं लिखते हैं –

'काव्यं रामायणं कृत्स्वं सीतायाश्चरितं महत्।
पौलस्त्यवधमित्येवं चकार चरितव्रतः।।[17]

कहकर सीता चरित्र के महत्व को दर्शाया है। साथ ही सीता के चरित्र की प्रधानता को निरूपित किया है। कविराज राजशेखर ने अपनी अलौकिक कल्पना शक्ति से बालरामायण में अनेक नवीन चित्र प्रस्तुत किए हैं। नायिका सीता सामान्य गुणों से युक्त होते हुए स्वकीया नायिका के रूप में चित्रित की गई है। उनका व्यक्तित्व, सौंदर्य व चरित्र अनुपम है। आज सतत् बढ़ रही अपसंस्कृति के परिणामस्वरूप हमारा समाज भौतिकवाद के दलदल में धंसता जा रहा है। ऐसे संक्रमित काल में नवपीढ़ी के अभ्युत्थान के लिए सीता चरित्र के अनुशीलन से ही समाज एवं राष्ट्र का कल्याण होगा और हमारी सभ्यता, संस्कृति, संस्कार, परम्परा, धर्म–दर्शन, जीवन–मूल्य सुरक्षित और संरक्षित हो सकेंगे क्योंकि चरित्र पर ही भारतीय राष्ट्र की नींव टिकी हुई है।

सन्दर्भ सूची

1. नाट्यशास्त्र – 24, 25 एवं 34
2. दशरूपकम् – 1ध्7
3. 'नाटकं सप्रकरणं भाणः प्रहसंन डिमः। व्यायोगसमवकारौ वीथ्यड.इति–दशरूपकम्– 1ध्8
4. दशरूपकम् – 2/9
5. दशरूपकम् – 2/5
6. बालरामायण – 1/30]32
7. बालरामायण – 1/40
8. बालरामायण – 10/11
9. बालरामायण – 6/34
10. बालरामायण – 6/35
11. बालरामायण – 10/9
12. बालरामायण – 6/41
13. बालरामायण – i`"B 469
14. बालरामायण – i`"B 119
15. बालरामायण – 6/27
16. बालरामायण – 6/29
17. वाल्मीकि रामायण & 4/6